प्रातःक्लास 5.3.68 ओमशान्ति पिताश्री मधुबन

ओमशान्ति। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं ; क्योंकि बहुत बेसमझ बन गये थे। 5000 वर्ष पहले भी तुमको समझाया था और दैवी कर्म भी सिखलाये थे । तुम दैवी धर्म में भी आये थे। ड्रामा प्लैन अनुसार पुनर्जनम लेते और कलाएं कमती होते–2 यहां प्रैक्टिकल बिल्कुल ही ....कला हो गई है; क्योंकि यह है ही तमोप्रधान रावण राज्य। यह रावण भी पहले सतोप्रधान था फिर सतो, रजो, तमो बना है। अभी तो बिल्कुल ही तमोप्रधान है। अभी इनका अंत है। रावण राज्य को कहा ही जाता हैं आसुरी राज्य। ख़ास भारतवासी बिल्कुल ही तमोप्रधान बन गये हैं। रावण को जलाने का फैशन भी यहां ही निकला है। रामराज्य और रावण राज्य भारतवासी ही कहते हैं। रामराज्य होता ही है सतयुग में। रावण राज्य है कलियुग में। यह बड़ी समझ की बात है। बाबा को तो वण्डर लगता है। अच्छे–2 बच्चे पूरे न समझने के कारण अपने तकदीर को लकीर लगा देते हैं। जैसे यह ओमप्रकाश है, कितना अच्छा, सयाना, समझू है। बहुत फर्स्ट क्लास सर्विस कर सकते हैं, अपना भाग्य बहुत ऊँच बना ... सकते हैं ; परन्तु रावण के अवगुण हैं, उनको चटक पड़े हैं। दैवीगुणों का खुद भी वर्णन करते हैं। बाबा ने समझाया है तुम वही देवता थे। तुमने ही 84 जन्म भोगे हैं। तुमको फर्क बताता हूँ तुम क्यों तमोप्रधान बने हो। यह है रावण राज्य। रावण है सबसे बड़ा दुश्मन। जिसने ही भारत को कितना कंगाल, तमोप्रधान बनाया है। आसुरी गुण किये हैं। बाप कहते हैं यह हैं आसुरी सम्प्रदाय। किसको कहो तो गाली देने, पत्थर मारने लग पड़ते। विघ्न डालते हैं। कल्प पहले भी विघ्न डालते थे। उनको कुछ पता थोड़ ही पड़ता है हम आसुरी सम्प्रदाय हैं या क्या हैं। रावण को जलाते हैं। अरे, अभी तो है ही कलियुग। फिर इनको रामराज्य कैसे कहेंगे? किसने रामराज्य स्थापन किया? कौन कहेंगे गांधी ने रामसम्प्रदाय स्थापन किया है? और ही कलियुगी तमोप्रधान हुआ है। रामराज्य में इतने आदमी थोड़े ही होते हैं। वहां तो एक धर्म होता है। इस समय तो सभी मनुष्यों में हैं काम भूत, क्रोध का भूत, मोह का भूत अशुद्ध अहंकार का भूत ... है ना। हम अविनाशी आत्मा हैं। यह शरीर तो विनाशी चीज़ है। यह भूल जाते हैं। आत्माभिमानी बनते ही नहीं। देहअभिमानी बहुत हैं। देहअभिमान आत्मा अभिमान में कितना फर्क है। आत्माभिमानी देवी–देवताएं सारे विश्व के मालिक बन जाते हैं। देहअभिमानी होने से कंगाल बन जाते हैं। भारत सोने की चिड़िया थी। भल कहते भी हैं; परन्तु समझते नहीं हैं। मैंढक अथवा बुलबुल आदि आवाज़ करते हैं। वैसे यह भी कुछ समझते नहीं हैं। रामायण बैठ पढ़ते हैं बिल्कुल नॉनसेन्स। सारी रामायण में गालियां ही गालियां हैं रामचन्द्र को। बिचारे की इज्ज़त ही गंवांय दी है। किसकी स्त्री चली जाये यह इज़्ज़त गंवाई हुई ना। सो भी रावण चुरा ले गया। उस समय रावण कहां से आया? रावण का बुत बनाय फिर कहानियां आद बैठ सुनाते यह हुआ, यह हुआ। नॉनसेन्स बुद्धि हैं ना। शिवबाबा आते ही हैं दैवी बुद्धि बनाने। बाप कहते हैं मीठे–2 बच्चों तुमको हम विश्व का मालिक बनाता हूँ। यह ल.ना. विश्व के मालिक थे। कब सुना? इन्हों को राजाई किसने दी? इन्होंने कौन सा कर्म किया जो इतना ऊँच पद पाया? कर्मों की बात है ना। मनुष्य आसुरी कर्म करते हैं जो विकर्म विनाश हो जाते हैं। सतयुग में कर्म अकर्म होते हैं। वहां विकर्मों का खाता होता ही नहीं। बाप समझाते हैं आसुरी सम्प्रदाय न समझने कारण कितने विघ्न डालते हैं। कह देते हैं शिव शंकर एक ही है। अरे, शिव शंकर तो अलग है। वह शिव निराकार अकेला दिखाते हैं, शंकर के साथ पार्वती दिखाते हैं। दोनों को एक्टिविटी एकदम अलग। प्राईम मिनिस्टर प्रज़ीडेन्ट को एक थोड़े ही कहेंगे। दोनों का मर्तबा बिल्कुल अलग। तो शिव और शंकर को तुम एक कैसे कहते हो? यह भी जानते हैं रामसम्प्रदाय में आना ही न है तो जैसे समझते ही नहीं। आसुरी सम्प्रदाय तो गालियां ही देंगे। पत्थर मारेंगे। तमोप्रधान हैं ना। अभी विघ्न ही डालते हैं। उनमें 5 विकार हैं। देवताएं तो हैं सम्पूर्ण निर्विकारी। उन्हों का कितना ऊँच पद है। अभी तुम समझते हो हक(म) कितने विकारी थे। विकार से ही पैदा होते हैं ना। सन्यासियों को भी विकार से पैदा

होना ही है। माता के गर्भ से जन्म ले फिर सन्यास करते हैं। सतयुग में तो यह बातें हीं नहीं होतीं। सन्यासी कोई सतयुग के वासी थोड़े ही हैं। सतयुग को भी समझते नहीं। कई तो कह देते सतयुग सदैव है ही है। जैसे कृष्ण तो हाजरा हजुर ही है। राधे भी हाजरा हजुर है। अनेक मत मतान्तर अनेक धर्म हैं ; परन्तु वह सब हैं आसुरी। आधा कल्प दैवी मत चलती है, जो अभी तुमको मिल रहा(ही) है। तुम ही ब्रह्मावंशी, सूर्यवंशी , चन्द्रवंशी भी बनते हो। वह दोनों डिनायस्टी और एक ब्राह्मणों का कुल होता है। इनको डिनायस्टी नहीं कहेंगे। ब्राह्मणों की राजाई होती नहीं। यह भी तुम जानते हो। वह भी कोई–2 समझते हैं। कोई तो बिल्कुल सुध(रते) ही नहीं। कोई न कोई भूत तो है ही। सतयुग में कोई भी भूत होता नहीं। कलियुग के बाद सतयुग आता हैं। वहां होते ही हैं देवताएं। बहुत सुखी होते हैं। भूत ही दुःख देते हैं। काम भूत आदि, मध्य, अंत दुःख देते हैं। तो इसमें बहुत मेहनत करनी है। मासी का घर नहीं है। ल. ना. जैसा बनना है तो सर्वगुण सम्पन्न.....बनना है। बाप समझाते हैं भाई–बहन समझो। तो क्रिमिनल दृष्टि नहीं जावेगी। हर बातें(बात में) हिम्मत चाहिए। कोई–2 कह देते हैं शादी नहीं करेंगे तो निकलो घर से बाहर। तो हिम्मत चाहिए ना। सब कुछ जांच भी की जाती है। तुम बच्चे तो अभी बहुत–2 पदमभाग्यशाली बन रहे हो। जानते हो यह सब कुछ खत्म हो जावेगा। सब मिट्टी में मिल जाना है। कोई तो अच्छी हिम्मत रख चल पड़ते हैं। कोई तो हिम्मत रख फेल भी हो जाते हैं। बाबा हर बात में अच्छी रीत समझाते रहते हैं। बाबा ने कितना समझाया है ऐसे–2 प्रश्न बनाकर पर्चा छपाओ। कलियुगी आसुरी सम्प्रदाय हो या सतयुगी आसुरी सम्प्रदाय हो ; परन्तु अभी तक बम्बई, देहली, कलकत्ता कोई की बुद्धि में नहीं बैठा है। फर्रूखाबाद वालों ने झट पर्चे छपा कर बाबा को भेज दिये हैं सैम्पुल। कमाल की है। किसमें कोई की बुद्धि किसमें (कोई) की बुद्धि अच्छा काम करता(ती) है। नहीं करते हैं (तो) फिर समझा जाता है योग पूरा न है। भारत का प्राचीन राजयोग ही मशहूर है। इस योग से ही तुम विश्व के मालिक बनते हो। पढ़ाई है सोंस ऑफ इनकम। पढ़ाई से नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार तुम ऊँच पद पाते हो। देहीअभिमानी हो रहना बड़ा मुश्किल है। मुश्किल कोई (इकट्ठे) ठहर सकते हैं। बहन को भी देखने से दिल होती है उनको भाकी पहनूं , हाथ लगाऊँ। बहुत रिर्पोट्स आती हैं। भाई–बहन के सम्बन्ध में भी बुद्धि चलायमान हो जाती है ; इसलिए बाप इससे भी ऊँच ले जाते हैं। अपन को आत्मा समझो ,दूसरे को भी आत्मा भाई समझो। हम सब भाई–2 हैं। तो दूसरे कोई दृष्टि जावेगी नहीं। शरीर को देखने से ही क्रिमिनल खयालात होती है। बाप कहते हैं बच्चे अशरीरी भव–देहीअभिमानी भव। अपन को आत्मा समझ, आत्मा अविनाशी है शरीर से पार्ट बजाती है। पार्ट बजाया फिर शरीर से अलग हो जाना है। कपड़ा उतार देना चाहिए। वह एक्ट(र्स) पार्ट पूरा कर कपड़े बदली कर देते हैं। तुमको तो यह पुराना कपड़ा उतार नया कपड़ा पहनना है। आत्मा तमोप्रधान है तो शरीर भी तमोप्रधान है। तमोप्रधान आत्मा मुक्ति में जा नहीं सकती। पवित्र हो तब जाये। अपवित्र आत्मा वापस जा नहीं सकती है। यह तो झूठ बोलते हैं फलाना ब्रह्म में (ली)न हुआ यह ....एक भी जा नहीं सकते। वहीं जैसे सिजरा बना हुआ है। वैसे ही रहता है। यह तुम ब्राह्मण बच्चे ही जानते हो। गीता में ब्राह्मणों का नाम कुछ दिखाया नहीं है। यह तो दिखाया है प्रजापिता ब्रह्मा के तन में प्रवेश करता हूँ तो ज़रूर एडॉप्शन चाहिए ना। तो ब्राह्मण तो हैं विकारी। निर्विकारी ब(नने) में भी कित(ना) सितम सहन करनी पड़ती है। विख न मिलने से अपन को मारने लग पड़ते हैं कि विख दो नहीं तो हम कूदते हैं। आँखों से यह नाम,रूप देखने से बहुतों को विकल्प आते हैं। भाई–बहन के सम्बन्ध में भी गिर पड़ते हैं। लिखते हैं बाबा हमने काला मुंह कर दिया है। भाई–बहन हो और काला मुँह कर दे, उनको तो जेल में डालना चाहिए। बाप ने कहा भाई–बहन हो रहो। तुमने यह ख़राब काम किया। इसकी बड़ी भारी सज़ा मिल जाती है। वैसे कोई दूसरे को ख़राब करते हैं तो उनको जेल में डाल देते हैं। वैश्याओं पास

जाने से कोई जेल की बात नहीं होती। उनका तो धंधा ही यह है। भारत कि(त)ना पवित्र था जो ..... किया था। उनका नाम ही है शिवालय। शिवबाबा ने ही स्थापन किया। यह ज्ञान भी कोई में है नहीं।... शास्त्र आदि जो भी हैं वह सब हैं भक्ति कर्मकाण्ड के। इनमें ज्ञान कुछ है नहीं। और ही पतित बनते जाते। ज्ञान से होती है सद्गति। बाकी भक्ति के कर्मकाण्ड से होती है दुर्गति। बाप कहते हैं इस बात में लड़ने–झगड़ने की क्या दरकार है? सद्गति कहा ही जाता है सतयुग को। दुर्गति कहा जाता है कलियुग को। सत(युग) में सब सद्गति में हैं ; इसलिए कोई पुरुषार्थ भी नहीं करते। यहां सब गति–सद्गति के लिए पुरुषार्थ करते (हैं) ; क्योंकि दुगर्ति में हैं। गंगा स्नान करने जाते हैं तो ज़रूर दुगर्ति में हैं ना। गंगा का पानी थोड़े ही सद्गति वा पतित से पावन बनावेगी। मनुष्य कुछ भी नहीं जानते हैं। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं जो समझते हैं। कोई समझते ही नहीं तो दूसरों को क्या समझावेंगे ; इसलिए बाबा भेजता ही नहीं। गाते भी हैं बाबा आवेंगे तो हम आपके ही मत पर चलेंगे। देवता बनेंगे। देवताएं रहते ही हैं सतयुग–त्रेता में ; परन्तु फिर भी दैवीगुण धार(ण) नहीं करते हैं। आसुरी स्वभाव में ही चलते रहते हैं। सबसे जास्ती है विकार। इन बिगर तो मनुष्य रह नहीं सकते। यह विकार है माई–बाप का वर्सा। यहां तुमको मिलता राम का वर्सा। पवित्रता का वर्सा मिलता है। वहां विकार की बात ही नहीं होती। श्रीकृष्ण के लिए (तो) समझाया है वह पावन था। वह ही फिर 84 जन्म ले पतित बने हैं। लोग कहते हैं कृष्ण तो भगवान है। उनको तुम 84 जन्म में दिखाते हो। अरे, भगवान तो निराकार, उनका नाम ही (है) शिव। बाप कितना अच्छी रीत समझाते हैं। तरस भी पड़ता है। रहमदिल है ना। यह कितना अच्छा, समझदार बच्चा है। भभका भी अच्छा है। ज्ञान और योग की ताकत है तो कशिश रकते(करते) हैं। पढ़े–लिखे को आदर अच्छा मिलता है। अनपढ़े को आदर नहीं मिलता। यह तो जानते हैं सभी आसुरी सम्प्रदाय हैं। कुछ भी समझते नहीं। शिव और शंकर तो बिल्कुल ही क्लीयर हैं। वह है ही मूलवतन में। वह बीच में सभी एक जैसे कैसे होगी ? सभी भगवान कैसे होंगे? यह तो तमोप्रधान दुनियाँ। सभी को कुत्ते, बिल्ले, ठिक्कर, भित्तर में ईश्वर कह देते। अपन को भी आसुरी सम्प्रदाय समझते नहीं। रावण दुश्मन है आसुरी सम्प्रदाय का जो आप समान बना देते हैं। बाप फिर तुमको आप समान दैवी सम्प्रदाय बनाते हैं। वहां रावण होता ही नहीं। वहां थोड़े ही रावण को जलावेंगे। आधा कल्प बाद रावण राज्य होता है। आधा कल्प उनको चलना है। मनुष्य कितने पत्थर–ठिक्कर बुद्धि हैं। बाप की कितनी इनसल्ट, ग्लानी करते हैं। भारतवासियों को देख और ही सर्वव्यापी कह देते हैं। सबसे जास्ती गिरते भी यह हैं। बाप कहते हैं भारत में सबसे जास्ती ग्लानी करते हैं। ग्लानी करते–2 एकदम पत्थर बुद्धि बन जाते हैं। तब ही मुझे आना पड़ता है। अभी तुम सुधर रहे हो। रामराज्य होता ही है सतयुग में। गांधी फिर रामराज्य कैसे कर सकते हैं? वह कोई कहते थे क्या कि आत्मा अभिमानी बनो? बाप ही संगम पर कहते हैं। यह है उत्तम ते उत्तम पुरुष बनने का युग। वह फिर समझते गांधी ने रामराज्य स्थापन किया। फिर उनसे बच्चा नेहरू निकला। अभी विष्णु के नाभी से ब्रह्मा निकला यह भी समझते थोड़े ही हैं। यह तो और ही रावण राज्य को पक्का कर गये हैं। कितना पतित बन गये हैं। खूब आग लगाते, पत्थर ठोकते रहते हैं। तो बाप कितना प्यार से समझाते हैं। .... कितना प्यार से बाप को याद करना चाहिए। बाबा आपकी तो कमाल है। हम कितने पत्थर बुद्धि थे। आप हमको ऊँच बनाते हो। आपकी मत बिगर हम और कोई की मत पर नहीं चलेंगे। पिछाड़ी को सब समझेंगे। बरोबर ब्रह्माकुमारियाँ दैवी मत पर चल रही हैं। कितनी अच्छी.. बातें सुनाती हैं। आदि, मध्य, अंत का परिचय देती हैं। कैरेक्टर्स कितना सुधारती हैं। कोई कहते हैं यह बिल्कुल ठीक कहते हैं। बाप भी कहते हैं सभी को समझाओ। इन देवताओं को(का) सतयुग में कैरेक्टर्स कितना अच्छा था। कलियुग में तमोप्रधान हैं। 84 जन्मों को कोई भी नहीं जानते हैं। किस(से)

आसुरी सम्प्रदाय कहो तो बिगर(ड़) पड़ते हैं। क्या शास्त्र सब झूठे हैं? यह है ही झूठ खण्ड। झूठी बातें सुनते–2 सब झूठ बन गये हैं। जहां सच्च है वहां झूठ की रत्ती नहीं। पतित होते ही हैं कलियुग में; इसलिए सब पुकारते हैं आकर पावन बनाओ। पावन बनने की शिक्षा बाप ही देते हैं। वह समझते हैं कलियुग पूरा होने में अजन 40 हजार वर्ष पड़े हैं। बाप कहते हैं कल्प ही(की) आयु ही 5000 वर्ष है। इस पर भी बिगड़ते हैं। शास्त्र सब झूठे हैं। फिर भी तुम समझाते हो कोई समझते हैं, कोई नहीं समझते हैं। जो यही सैम्पलिंग होंगे वही समझेंगे। इन सब विघ्नों से भी पार होना है। बाकी पाण्डवों–कौरवों की लड़ाई कहां। देवताएं सतयुग में ,असुर कलियुग में। उनकी फिर लड़ाई कैसे होगी? कितनी झूठी बातें हैं। स्थूल लड़ाई की तो बात ही नहीं। यह तो 5 विकारों से तुम्हारा युद्ध है। इनमें स्थूल हाथ्याराक(हथियारों) आद की बात नहीं है। उन लड़ाई करने वालों को भी समझाते हैं। बन्दूक चलाते ही शिवबाबा को याद करते रहो तो स्वर्ग में जावेंगे। स्वर्ग में तो अनेक प्रकार के मर्तबे हैं। राजा–रानी, प्रजा, दास–दासियां ,चण्डाल सब चाहिए ना। मुख्य बात है काम पर जीत पाना ; इसलिए बापदादा युक्ति भी बताते रहते हैं। भाई सम्बन्ध से भी ऊपर जाना है। अगर काला मुँह किया तो कला काया चट हो जावेगी। कुल कलंकित बन पड़े ना। फिर बहुत पुरुषार्थ करना पड़े। फिर अला भी करना पड़ता है। ऐसे (नहीं) समझो उनका वह (जमा) है। नहीं वह कमाई की (तो) खत्म हो जाती है। फिर नये सिरे मेहनत करनी पड़े। बाप को बुलाते ही हैं कि आकर पतित तो पावन बनाओ। पतित माना ही विकारी। विकारी पर ही कितने विघ्न पड़ते हैं। जबरदस्ती बांध कर भी गन्द करते हैं। मार भी डालते हैं। सीढ़ी में भी दिखाया है ना ससुर कहते हैं इनको विख दो। नहीं देती है तो मारो लाठी। ऐसे बहुत होते हैं। कहते हैं ऐसा(सी) हालत में हम क्या करें? बाबा कहते हैं तुम्हारा दोष नहीं है। उनकी सज़ा भी वह भोगेंगे। अगर तुम्हारी आश है तो तुम भी दोषी हो। प्रवस(परवश) की हालत में क्या कर सगेंगे? तो बाप प्वाइन्ट्स भी सब देते रहते हैं। यह भी समझाया है जहां पूज्य है वहां पुजारी होते नहीं। शंकराचार्य को भी तुम लिख सकते हो कायदे मुजीब पूज्य को पुजारी कैसे कह सकते? तुम हो पुजारी। भ्रष्टाचार से पैदा हुये हो ना। देवताएं तो योगबल से .... हैं। तुम भ्रष्टचार से पैदा हुये हो, इसलिए इतना गुस्सा करते हो। तुम तो पुजारी हो ना। सतयुग में पुजारी होते नहीं ; परन्तु वह तो सतयुग को ही नहीं .....हैं। सतयुग में होते ही नहीं तो माने कैसे? वह हैं ही हठयोग निवृत्तिमार्ग वाले। उनका धर्म ही अलग है। समझने से पहले ही गाली बकने शुरू कर देते हैं। यह .....है। कितना समझाया जाता है। 5 विकार भी कम नहीं है। इसमें भी मुख्य है काम। उनके आने से फिर सब आ जाते हैं। वह अपना वज़ीर .....सब साथ ले आते हैं। मेहनत है। विश्व का मालिक मेहनत बिगर थोड़े ही बन सकते हैं। मनुष्य तो जैसे मतवाले हैं। कहते ... सतयुग यह सिर्फ देवताएं ही होंगे। ऐसे कब हो नहीं सकता। हमने कब सुना नहीं। अरे, हम सुनते हैं बेहद के बाप से। तुम तो सुनते ही हो असुरों से। तो यह सब बातें बहुत ही समझने की हैं। कितनी ऊँच कमाई है। उस धंधे में भी बाबा .... था क्या? कोई की ताकत नहीं जो बाबा से पहुँच सके जवाहरात आदि के काम में। यह भी अविनाशी जवाहर है। वह है विनाशी। तो बाप कहेंगे मेरे जैसे बनो। फॉलो करो। कितना सहज युक्ति बताते हैं। अपन को आत्मा समझो। प्वाइन्ट्स तो बहुत हैं। बाप कहते हैं अच्छी–2 प्वाइन्ट्स अपने पास नोट कर दो । फिर भाषण करने समय रिवाइज़ करो। पहले लिखना चाहिए फिर दो/तीन बार प्रैक्टिस करनी चाहिए। फिर जो प्वाइन्ट्स ... जाये उनको एड करो। मेहनत करनी पड़े। इसमें भी देहीअभिमानी चाहिए। भल भाषण बहुत अच्छा करते हैं ; परन्तु योग है नहीं। अच्छा मीठे–2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग। मीठे–2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप की नमस्ते। नमस्ते। ओमशान्ति।